

हरियाणा के समकालीन हिंदी साहित्य में युवा पीढ़ी की समस्याएँ

पूनम 1, डॉ. रेणुका 2

1 हिंदी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

2 शोध पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12231>

सारांश

समकालीन हिंदी साहित्य अपने समय के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने वाला महत्वपूर्ण माध्यम है। हरियाणा का हिंदी साहित्य भी बदलते सामाजिक परिवेश, ग्रामीण जीवन, आधुनिकता, शिक्षा, रोजगार, परिवार, लैंगिक संबंधों तथा सांस्कृतिक संक्रमण को निरंतर अभिव्यक्त करता रहा है। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रही है। बेरोजगारी, रोजगार की असुरक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव, प्रवासन, पारिवारिक अपेक्षाएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता, नशे की प्रवृत्ति, डिजिटल माध्यमों का प्रभाव, प्रेम एवं वैवाहिक संबंधों में परिवर्तन तथा पहचान और भविष्य को लेकर असुरक्षा इनमें प्रमुख हैं। हरियाणा के ग्रामीण युवाओं के संदर्भ में रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में शहरों तथा विदेशों की ओर प्रवासन भी महत्वपूर्ण सामाजिक यथार्थ है। उपलब्ध अध्ययनों में हरियाणा के ग्रामीण युवाओं के प्रवासन के प्रमुख कारणों में रोजगार की कमी, कम आय तथा बेहतर अवसरों की तलाश सामने आती है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हरियाणा के समकालीन हिंदी साहित्य में युवा पीढ़ी की समस्याओं के चित्रण का आलोचनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर सामाजिक यथार्थ के दस्तावेज के रूप में देखा गया है। साथ ही यह भी विश्लेषित किया गया है कि समकालीन साहित्य युवा पीढ़ी की समस्याओं को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है तथा उनके समाधान की संभावनाओं की ओर संकेत करता है।

मूल शब्द: हरियाणा, हिंदी साहित्य, समकालीन साहित्य, युवा पीढ़ी, बेरोजगारी, प्रवासन, सामाजिक परिवर्तन, युवा चेतना

साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ समाज की आलोचनात्मक चेतना भी है। किसी भी काल का साहित्य उस समय के मनुष्य की आकांक्षाओं, संघर्षों, असुरक्षाओं और सामाजिक परिस्थितियों को अपने भीतर समाहित करता है। समकालीन हिंदी साहित्य में व्यक्ति और समाज के बीच बदलते संबंधों को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और डिजिटल संस्कृति ने भारतीय समाज की संरचना और जीवन-शैली को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों का सबसे अधिक प्रभाव युवा पीढ़ी पर दिखाई देता है। हरियाणा का सामाजिक परिवेश अपनी विशिष्ट ग्रामीण संस्कृति, कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, बदलती शिक्षा व्यवस्था और तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण विशेष महत्व रखता है। हरियाणा में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में शिक्षा संस्थानों, समाचार-पत्रों, टेलीविजन तथा साहित्यिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साथ ही हरियाणवी भाषिक परिवेश का हिंदी के प्रयोग पर भी प्रभाव दिखाई देता है।

समकालीन हरियाणवी हिंदी साहित्य में सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक चेतना, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे प्रश्नों की अभिव्यक्ति मिलती है। हाल के एक अध्ययन में हरeram समीप की आंधियों के दौर में तथा राजेश्वर वशिष्ठ की सुनो वाल्मीकि जैसी कृतियों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन, जन-संघर्ष, दलित चेतना और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को रेखांकित किया गया है। इसी व्यापक सामाजिक परिदृश्य में युवा पीढ़ी की समस्याओं का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- हरियाणा के समकालीन हिंदी साहित्य में युवा पीढ़ी की स्थिति का अध्ययन करना।

- युवा पीढ़ी से संबंधित प्रमुख सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को पहचानना।
- हिंदी साहित्य में बेरोजगारी एवं रोजगार संबंधी समस्याओं के चित्रण का अध्ययन करना।
- युवा पीढ़ी में बढ़ते प्रवासन और उसके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- पारिवारिक अपेक्षाओं एवं पीढ़ीगत संघर्षों का अध्ययन करना।
- डिजिटल संस्कृति और सोशल मीडिया के युवा जीवन पर प्रभाव का साहित्यिक विश्लेषण करना।
- युवा पीढ़ी की अस्मिता, आकांक्षाओं और भविष्य संबंधी चिंताओं का अध्ययन करना।
- साहित्य में युवा समस्याओं के संभावित समाधान और सकारात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित करना।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए हरियाणा से संबंधित समकालीन हिंदी साहित्य, आलोचनात्मक साहित्य, शोध-पत्रों तथा उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है।

साथ ही युवा पीढ़ी से संबंधित सामाजिक परिस्थितियों को समझने के लिए उपलब्ध सामाजिक शोधों को संदर्भ के रूप में लिया गया है। उदाहरण के लिए, हरियाणा के भिवानी और हिसार जिलों में ग्रामीण युवाओं के प्रवासन पर किए गए अध्ययन में रोजगार की कमी, अस्थिर आय और कृषि संबंधी समस्याओं को प्रवासन के प्रमुख कारणों के रूप में पाया गया।

हरियाणा के समकालीन हिंदी साहित्य में युवा पीढ़ी

हरियाणा का युवा आज परंपरा और आधुनिकता के बीच खड़ा दिखाई देता है। एक ओर उसके सामने परिवार, जाति, समुदाय, ग्रामीण संस्कृति और पारंपरिक सामाजिक मूल्यों की अपेक्षाएँ हैं,

तो दूसरी ओर शिक्षा, रोजगार, तकनीक, वैश्विक संस्कृति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आकांक्षाएँ हैं।

इस द्वंद्व ने युवा जीवन को जटिल बना दिया है। युवा अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, निजी रोजगार, व्यवसाय तथा विदेश जाने जैसे विकल्पों की ओर देखता है। परिणामस्वरूप उसकी मानसिकता में निरंतर परिवर्तन दिखाई देता है।

समकालीन साहित्य इसी परिवर्तनशील युवा मानस को अभिव्यक्त करता है।

बेरोजगारी और रोजगार की समस्या

युवा पीढ़ी की सबसे गंभीर समस्याओं में बेरोजगारी प्रमुख है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उपयुक्त रोजगार न मिलना युवा मन में असुरक्षा और निराशा पैदा करता है।

हरियाणा जैसे राज्य में सरकारी नौकरी को लंबे समय से सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक स्थिरता से जोड़ा जाता रहा है। परिणामस्वरूप अनेक युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में वर्षों लगा देते हैं। परीक्षा, परिणाम और रोजगार की अनिश्चितता उनके मानसिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है।

समकालीन साहित्य में बेरोजगार युवा केवल आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह अपने अस्तित्व और सामाजिक पहचान को लेकर भी संघर्ष करता दिखाई देता है।

आज हरियाणा में युवा रोजगार और भविष्य को लेकर सार्वजनिक विमर्श का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हाल के वर्षों में राज्य में युवाओं के लिए उद्यमिता, कौशल-विकास और रोजगार जैसे मुद्दों पर विशेष कार्यक्रमों पर जोर दिया गया है।

शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव

आधुनिक युवा के लिए शिक्षा सामाजिक उन्नति का प्रमुख साधन है। लेकिन शिक्षा के बढ़ते प्रतिस्पर्धात्मक स्वरूप ने युवाओं पर मानसिक दबाव भी बढ़ाया है।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, बार-बार परीक्षा देना, परिणाम की प्रतीक्षा और रोजगार न मिलने की स्थिति युवा के भीतर असफलता की भावना उत्पन्न कर सकती है।

हरियाणा के साहित्य में ऐसे युवा पात्रों को देखा जा सकता है जो अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संघर्ष करते हैं। उनके लिए शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं बल्कि जीवन में सफलता और सम्मान प्राप्त करने का माध्यम बन जाती है।

प्रवासन की समस्या

हरियाणा की युवा पीढ़ी के संदर्भ में प्रवासन अत्यंत महत्वपूर्ण समस्या है। ग्रामीण क्षेत्र का युवा बेहतर शिक्षा, रोजगार, आय और जीवन-स्तर की तलाश में बड़े शहरों तथा विदेशों की ओर आकर्षित होता है।

हरियाणा के ग्रामीण युवाओं पर किए गए एक अध्ययन में रोजगार की कमी, कम आय और कृषि से संबंधित समस्याओं को प्रवासन के push factors तथा बेहतर रोजगार, अधिक वेतन और बेहतर जीवन-स्तर को प्रमुख pull factors पाया गया।

विदेश जाने की आकांक्षा ने युवा साहित्य में एक नई मानसिकता को जन्म दिया है। विदेश की आर्थिक सफलता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़कर देखने की प्रवृत्ति कई बार युवा को अपने परिवार और स्थानीय संस्कृति से दूर करती है।

इस प्रकार प्रवासन केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं बल्कि सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन भी है।

पारिवारिक अपेक्षाएँ और पीढ़ीगत संघर्ष

हरियाणा की सामाजिक संरचना में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवा से शिक्षा, रोजगार, विवाह और सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर परिवार की अनेक अपेक्षाएँ रहती हैं।

कई बार युवा की व्यक्तिगत इच्छाएँ और परिवार की अपेक्षाएँ एक-दूसरे से टकराती हैं। युवा अपने करियर, प्रेम, विवाह और जीवन-शैली के संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेना चाहता है, जबकि परिवार पारंपरिक मूल्यों को प्राथमिकता देता है।

समकालीन साहित्य इस पीढ़ीगत संघर्ष को संवेदनात्मक रूप से प्रस्तुत करता है।

प्रेम, विवाह और व्यक्तिगत स्वतंत्रता

युवा पीढ़ी के जीवन में प्रेम और विवाह से जुड़े प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक शिक्षा और डिजिटल माध्यमों के कारण युवाओं के बीच संबंधों के स्वरूप में परिवर्तन आया है।

जाति, परिवार, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत पसंद के बीच संघर्ष अनेक साहित्यिक रचनाओं का विषय बनता रहा है।

हरियाणा के सामाजिक संदर्भ में यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि परंपरागत सामाजिक मूल्यों और आधुनिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच तनाव स्पष्ट दिखाई देता है।

साहित्य इस तनाव को केवल प्रेम-कथा के रूप में नहीं बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक संरचना के संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

नशे और सामाजिक विचलन की समस्या

युवाओं में नशे की प्रवृत्ति भी एक गंभीर सामाजिक चिंता है। बेरोजगारी, निराशा, गलत संगति, सामाजिक दबाव और भविष्य की अनिश्चितता जैसी परिस्थितियाँ युवा जीवन को प्रभावित कर सकती हैं।

समकालीन साहित्य में नशे की समस्या को केवल व्यक्तिगत कमजोरी के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इसके पीछे मौजूद सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है।

साहित्यकार जब युवा पात्रों के माध्यम से इस समस्या को सामने लाता है तो वह समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

डिजिटल संस्कृति और सोशल मीडिया

डिजिटल तकनीक ने युवा जीवन को व्यापक रूप से बदल दिया है। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति, संचार और साहित्यिक सहभागिता के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं।

हालिया हिंदी साहित्य संबंधी अध्ययनों में भी यह बात सामने आई है कि इंटरनेट, सोशल मीडिया, ई-बुक और पॉडकास्ट जैसे माध्यमों ने युवाओं के लिए साहित्यिक अभिव्यक्ति और पाठकीयता के नए अवसर पैदा किए हैं, जबकि छोटे और त्वरित डिजिटल कंटेंट ने गहन पठन की आदत के सामने नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

हरियाणा के युवा भी इस डिजिटल परिवर्तन से अलग नहीं हैं। सोशल मीडिया ने उनकी भाषा, सोच, संबंधों और सामाजिक पहचान को प्रभावित किया है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है—क्या डिजिटल माध्यम युवा को अधिक अभिव्यक्तिशील बना रहा है या उसे त्वरित और सतही सूचना के संसार तक सीमित कर रहा है?

समकालीन हिंदी साहित्य इस प्रश्न पर विचार करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

भाषा और सांस्कृतिक पहचान

हरियाणा की भाषिक स्थिति भी युवा पीढ़ी के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। हरियाणवी बोली और मानक हिंदी के बीच युवा लगातार भाषिक संपर्क में रहता है।

हरियाणा में हिंदी के प्रयोग पर हरियाणवी भाषिक प्रभाव के कारण उच्चारण संबंधी विशिष्टताएँ दिखाई देती हैं।

दूसरी ओर डिजिटल संस्कृति और अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव से युवा भाषा में code-mixing और नए भाषिक प्रयोग बढ़ रहे हैं। इससे भाषा के स्वरूप और साहित्यिक अभिव्यक्ति दोनों में परिवर्तन दिखाई देता है।

इसलिए युवा पीढ़ी के संदर्भ में भाषा का प्रश्न केवल भाषिक शुद्धता का प्रश्न नहीं बल्कि सांस्कृतिक पहचान और आत्म-अभिव्यक्ति का प्रश्न भी है।

भविष्य की चिंता और मानसिक संघर्ष

समकालीन युवा के सामने सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्याओं में भविष्य की अनिश्चितता प्रमुख है।

उच्च शिक्षा के बावजूद रोजगार की चिंता, परिवार की अपेक्षाएँ, आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक तुलना और व्यक्तिगत असफलता युवा को मानसिक दबाव में डाल सकती हैं।

हरियाणा के ग्रामीण किशोरों पर किए गए एक समुदाय-आधारित अध्ययन में अवसाद संबंधी समस्या का भी अध्ययन किया गया था, जिससे यह संकेत मिलता है कि युवा और किशोर मानसिक स्वास्थ्य को सामाजिक संदर्भ में समझना आवश्यक है।

साहित्य इन मानसिक संघर्षों को आवाज देता है। साहित्यिक पात्रों की बेचौनी, अकेलापन, असफलता और आत्मसंघर्ष वास्तव में व्यापक सामाजिक परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

युवा पीढ़ी में स्त्री की स्थिति

हरियाणा के युवा समाज में लड़कियों की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है, लेकिन सामाजिक और पारिवारिक अपेक्षाएँ अभी भी उनके निर्णयों को प्रभावित करती हैं।

शिक्षा, रोजगार, विवाह, करियर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन की समस्या महिला युवाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

समकालीन साहित्य में युवा महिला पात्रों के माध्यम से स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, शिक्षा और अपनी पहचान बनाने की आकांक्षा व्यक्त होती है।

इस प्रकार युवा स्त्री विमर्श समकालीन हरियाणा के हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता है।

साहित्य में समाधान की संभावनाएँ

समकालीन साहित्य केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाधान की संभावनाओं की ओर भी संकेत करता है।

युवा समस्याओं के समाधान के लिए—

गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारपरक शिक्षा, कौशल विकास, स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, ग्रामीण उद्यमिता, डिजिटल साक्षरता, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ाव, नशामुक्ति संबंधी जागरूकता, युवाओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता जैसे प्रयास आवश्यक हैं।

साहित्य युवाओं को केवल समस्याओं का पात्र न बनाकर परिवर्तन के सक्रिय वाहक के रूप में भी प्रस्तुत कर सकता है।

निष्कर्ष

हरियाणा के समकालीन हिंदी साहित्य में युवा पीढ़ी का चित्रण बदलते सामाजिक यथार्थ को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। आज का युवा परंपरा और आधुनिकता, ग्रामीणता और शहरीकरण, स्थानीयता और वैश्वीकरण तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संघर्ष कर रहा है।

बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव, प्रवासन, पारिवारिक अपेक्षाएँ, प्रेम एवं विवाह से संबंधित संघर्ष, नशे की समस्या,

डिजिटल संस्कृति, भाषाई परिवर्तन और भविष्य की चिंता उसके जीवन की प्रमुख समस्याएँ हैं।

विशेष रूप से हरियाणा के ग्रामीण युवाओं के संदर्भ में रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में प्रवासन महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है। उपलब्ध शोध भी रोजगार, आय और बेहतर अवसरों को ग्रामीण युवा प्रवासन से जोड़ते हैं।

दूसरी ओर डिजिटल माध्यमों ने युवा पीढ़ी को साहित्य और अभिव्यक्ति के नए अवसर भी प्रदान किए हैं। इसलिए युवा पीढ़ी को केवल संकटग्रस्त पीढ़ी के रूप में देखना उचित नहीं होगा। उसमें रचनात्मकता, परिवर्तन की आकांक्षा और नए सामाजिक मूल्यों के निर्माण की क्षमता भी है।

अतः हरियाणा के समकालीन हिंदी साहित्य में युवा पीढ़ी का अध्ययन सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक परिवर्तन और भविष्य के समाज को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्य युवा की समस्याओं को सामने लाने के साथ-साथ समाज को उनके समाधान के लिए संवेदनशील बनाने का कार्य भी करता है।

संदर्भ सूची

1. Bala M. Hindi in Haryana and deviations in pronunciation of Hindi. Journal of Haryana Studies, 2022.
2. Maurya A S, Mishra A, Malik, J. Migration behaviour of rural youth in Haryana. Indian Journal of Extension Education, 2022, 58(3), 93–98-
3. Haryana ke Hindi kahani ka yug pridirshya. (n.d.). IndCat, INFLIBNET Centre.
4. Haryana ke Hindi upanyas sahitya mein yug paridirshya. (n.d.). IndCat, INFLIBNET Centre-
5. Haryana ka samkalin doha sahitya: Samvedna evam shilp. (n.d.). IndCat, INFLIBNET Centre-
6. Patil R N . The youth generation and Hindi literature: Impact of technology- Knowledgeable Research: A Multidisciplinary Journal, 2026;1(1):215–217-
7. The younger generation and Hindi literature: The impact of technology. Knowledgeable Research: A Multidisciplinary Journal, 2026;1(1):17–19-
8. Feminine trauma] cultural resistance] and Pingal&structured social consciousness in contemporary Haryanvi Ragni tradition. ShodhPatra: International Journal of Science and Humanities, 2026, 3(5).